

प्रवचन नं. ६२ गाथा - १३ श्लोक - ८ ता. १८८-७८ शनिवार, श्रावण वद-१ सं. २५०४

समयसार १३ मी गाथा न्यां आया है. सर्वज्ञानमें अस्पष्टित अेक ज्वद्रव्यके स्वभावके समीप जाने पर अनुभव करने पर अतूतार्थ है. क्या कडा ? आ ज्व जो आत्मा है उसकी पर्यायमें नव प्रकारका तत्व उत्पन्न होता है. अर्द्धिया नवतत्वमें ज्वका अेक अंश पर्याय अे त्यां लेना नवमें, और अज्वका ज्ञान अर्द्धिया होता है उसको अज्व लेना. अज्व पदार्थ नहीं लेना, अे ज्व अपनी पर्यायमें अेक अंशरूप जो है, अे नवतत्वमें उसको ज्व कडा. और अज्व जो ७५ है उसका ज्ञान होते है ये उसको यहां अज्व कडा. और अपनी पर्यायमें शुभभाव होने लायक होते है, तब सामे कर्म जो है निमित्त उसको द्रव्य पुण्य कडा. अने भावपुण्य अपनी पर्यायमें योग्यतासे, अपनी योग्यतासे अे ज्ञानमें शुभभाव होता है उसको ज्व भाव पुण्य कडा. अैसे 'पाप' अपनी योग्यतासे ज्वमें पाप तत्वकी लायकतसे उत्पन्न होता है ये भाव पाप. और उसमें निमित्त जो पूर्वका कर्म है उसको द्रव्यपाप कहेनेमें आता है. अैसे आस्रव अपनी पर्यायमें शुभ अशुभ आस्रव होने लायकसे अे समय उत्पन्न होने लायक है उत्पन्न होता है अपनी योग्यतासे, कर्मसे नहीं. कर्म त्यां निमित्त है, पण निमित्तसे होता है अैसा नहीं. समजमें आया ? आस्रव पुराणा निमित्त कर्म, जो पुराणा, उसको द्रव्य आस्रव कहेते है अने भाव आस्रव. अपनी पर्यायमें जो उत्पन्न होता है ये भाव आस्रव है. पीछे संवर निर्जरा ने मोक्ष. बंध रागमें रुक जाते है अपने कारणसे, अे भावबंध है, और पुराणा कर्म जो है अे द्रव्यबंध है.

और संवर अपनी योग्यतासे शुद्धिकी उत्पत्ति हुं अे ज्व संवर कहेनेमें आता है. और कर्मका उदय छतना न आया, और कोछ नया कर्म न आया उसको द्रव्य संवर कहेते है. और अपनी पर्यायमें शुद्धिकी वृद्धि हुं, उसको भाव निर्जरा कहेते है, और कर्मका उदय जे फिर जाता है उसको द्रव्य निर्जरा कहेते है. आहाहा ! और अपनी पर्यायमें मोक्ष होने लायक पर्याय जो उत्पन्न हुं केवणज्ञान अे भाव मोक्ष है. और उसमें कर्मका अभाव हुं उसको द्रव्य मोक्ष कहेते है. अैसे नवतत्व पर्यायमें उत्पन्न होता है. पण वो नव व्यवहारनयसे, पर्यायनयसे टेभने पर नव है. पण उसमें सम्यग्दर्शन उससे उत्पन्न नहीं होता. आहा ! समजमें आया ?

अे कहेते है ज्जुओ. त्तारे सम्यग्दर्शन कैसे होता है ? के सर्वज्ञानमें अस्पष्टित ! आहाहा ! सर्वज्ञानमें अपना ज्ञायकभाव पर्यायमें आस्रव आदि हुं, तो पण वस्तु तो अस्पष्टित ज्ञायकभाव परिपूर्णा रडी है. आहाहा ! नरक ने निगोदमें, निगोदमें अक्षरके अनंतमे भागे ज्ञानकी पर्याय हुं छतां वस्तु तो अस्पष्टित ज्ञायकभावे डी रडी है त्यां. आहाहा ! सूक्ष्म है भाछ ! और केवणज्ञान उत्पन्न हुं तो भी वस्तु तो त्रिकाणी ज्ञायकभाव है डी है. केवणज्ञान हुं तो ज्ञायकभावमें घट हो गछ के अक्षरमें अनंतमें भागे ज्ञानका क्षयोपशम रडा, तो ज्ञायकमें बढ गछ बात अैसा है नहीं. ज्ञायक तो त्रिकाणी अेरूप घट वध बिनाकी यीज है. आहाहा ! समजमें आया ? थोडी सूक्ष्म बात है भाछ.

अे त्रिकाण सर्वज्ञानमें अस्पष्टित ! आहाहा ! अेक ज्वद्रव्यके स्वभाव, त्रिकाणी ज्ञायक

परमपारिष्णामिक स्वभाव, राग आदि आस्रव ओ उदयभाव, संवर आदि क्षयोपशमभाव, केवणज्ञान आदि क्षायिकभाव सबसे भिन्न. आहाहा ! ओक द्रव्यके स्वभावके समीप जाकर, ओ द्रव्य स्वभाव तरफ़ जूकनेसे, अनुभव करनेपर, आहाहा ! ओक ज्वद्रव्यका स्वभाव ओकरूप जो त्रिकाण है, जो अपना सामान्य स्वभावमें से कभी विशेषमें आया नहीं. केवणज्ञानकी पर्यायमें भी सामान्य भाव आया नहीं. आहाहाहा ! औसा जो त्रिकाणी भगवान, ओकरूप ज्वद्रव्यका स्वभाव वो तरफ़की समीप जाने पर, है ? आहाहा ! अभूतार्थ है, तो नवतत्त्व पछी जूठा हुवा. आहाहा ! जीणी वात है भाछ !

भगवान आत्मा ज्ञायक, आनंद, शांत रसकी जेम शीतण शीतण बरफ़की शुं कडेवाय ओ ? पाट बरफ़की पाट होती है ने ५०-५० मणकी बरफ़ बरफ़ ठंडी, औसे भगवान आत्मा अकषाय स्वभावका पिंड बरफ़ जैसा शीतण है. ओ त्रिकाणी शांत रसका पिंड प्रभु, जे वस्तु पर्यायमें केवणज्ञानमें भी आती नहीं, अने अक्षरना अनंतमें भागमें भी आती नहीं, अरे जे मोक्षका मार्ग सम्यग्दर्शन है, जिसके समीप जाने पर सम्यग्दर्शन होता है, ओ पर्याय भी अंतर जाती नहीं अने ओ पर्यायमें भी द्रव्य सामान्य आता नहीं. आहाहा ! समजमें आया ? सूक्ष्म विषय है भगवान ! आहाहा ! यहां कहेते है, कि अनुभव करने पर, ओक द्रव्य स्वभाव त्रिकाणी है उसका स्वभावके अनुसार होकर अनुभव करने पर, तो अनुभव है, ये पर्याय है. अनुभव है ये पर्याय है. और उसका विषय ओकरूप द्रव्य स्वभाव है. आहाहा ! आवी वातुं छे.

औसे अनुभव करने पर, नवका भेद अभेदकी दृष्टिमें नवका भेद जूठा है, आहाहा ! उसका नाम सम्यग्दर्शन है, एतां सम्यग्दर्शनकी पर्याय अस्भलित स्वभावमें जाती नहीं और पर्यायमें अस्भलित द्रव्य स्वभाव आते नहीं. एतें सम्यग्दर्शनकी पर्याय अस्भलित स्वभावकी प्रतीत अने ज्ञान करती है. ज्ञानकी पर्याय अस्भलितका ज्ञान करती है. और अस्भलित स्वभाव सामान्यका श्रद्धा पर्याय प्रतीत करती है. एतें प्रतीत अने ज्ञानकी पर्याय, उसमें द्रव्य स्वभाव आता नहीं. आहाहाहा ! आवी यीज है. ओ अभूतार्थ हो गया, नव भेद. ओ दृष्टिका विषयमें वो आया नहीं, तो है नव, एतां गौण करके असत्यार्थ हो गया. मुष्य द्रव्य स्वभावकी दृष्टि करनेसे अनुभव करने पर, भूतार्थ ही यह है. अने पर्यायका नव भेद है ओ गौण करके लक्ष छोड करके उसके आ बाजु आये, तो ये नवतत्त्व अभूतार्थ हो गया. विषय है नहीं. द्रव्यका स्वभावकी दृष्टिमें ये है नहीं, माटे अभूतार्थ कहेनेमें आया है. आहाहा ! जीणी वातुं भारे.

इसलिये उन तत्त्वमें देओ नवतत्त्वका भेदमें भूतार्थनयसे, भूतार्थनयसे त्रिकाणी ज्ञायकभावकी दृष्टिसे, आहाहा ! ओक ज्व ही प्रकाशमान है. है ? नव भेदोंमें, विशेष प्रकाशमें दृष्टि छोडकर उसकी तो ओकीला सामान्य प्रकाशमान होता है. आहाहाहा ! आवुं दुर्लभ है. आ तो हज पहेली ( दशा ) सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान योथा गुणस्थाननी वातो छे भगवान, ओ विना सब ओ दया दान ने व्रत ने भक्ति ने पूजाने सारा संसार है. आहाहा ! परिव्रमणका कारण है. आहाहा ! भगवान आत्मा, ओ तत्त्वोंमें ओटले नवका भेदमें भूतार्थनयसे त्रिकाणीकी दृष्टि करनेसे यह ज्व ही प्रकाशमान है, नव भेद नहीं त्यां. आहाहाहा ! सूक्ष्म है भाछ ! पण करना पडेगा उसको, कल्याण करना हो तो ? अरे योर्यासी लाभमें अवतारमें दुःभी है,

आकुणतामां रागरूपी अग्निसे जल रह है. आहा ! राग आग दाह दहे सदा, आहाहा ! रागकी आगमें दाह जलती है अनादिसे, आहाहाहा ! ओ कषाय अग्निमें राग अग्नि भी अग्नि है, तो वो जलती है ने अग्निसे अत्यंत दुःखी है प्राणी, याहे तो शेर हो के राजा हो के देव हो, ये रागकी अग्निमें जलता है. आहा ! उसको छूटना हो, उससे छूटना हो, तो नवतत्त्वकी पर्यायमें जो भेद हुआ, उसका लक्ष छोडकर, ओक ज्वद्रव्य स्वभावके समीप जाने पर तेरे सम्यग्दर्शन होगा. आहाहाहा ! समजमें आया ?

“छस प्रकार यह ऐक्यरूपसे प्रकाशित होता हुआ” देखो. आहाहा ! ऐकरूप ऐक्य नाम सामान्य जे ओला अनेक नव भेद था, उससे छुटकर त्रिकाणी ज्ञायकभावका अनुभव करने पर ऐक्यपणा आया. छस प्रकार ओ ऐक्यरूपसे प्रकाशित होता हुआ, आहाहाहा ! शुद्धनयरूपसे अनुभव किया जाता है. शुद्धनय नाम ज्ञानकी जे शुद्ध पर्याय, उसका विषय जो ध्रुव, ओ शुद्धनयसे अनुभव किया जाता है. आहाहा ! अंतर्मुख होनेकी दृष्टिसे और अंतर्मुख होनेका ज्ञानका नयसे ओ अनुभवमें आता है. आहाहाहा ! ऐसी बात है भाए ! “और” ओ अनुभूति है ये आत्मभ्याति है. आ टीकाका नाम ही आत्मभ्याति है. आहाहा !

नवतत्त्वकी योग्यतासे उत्पन्न हुए पर्याय, तो ये भेदमेंसे निकलकर, आहाहा ! ओ भेद उपरकी दृष्टि है ओ उठाकर अपनी दृष्टि द्रव्य स्वभावमें जोडनेसे उसको अनुभव द्रव्यका होता है, है तो अनुभव पर्याय, पण वो द्रव्यके आश्रयसे अनुभव हुआ, उसको यहां सम्यग्दर्शन ने ज्ञानका अनुभव कहेनेमें आता है. आहाहाहा ! समजमें आया ? और ओ अनुभूति है ओ आत्मभ्याति है. आत्मानी पहेयान है. आहाहाहा भगवान आत्मा आनंदका पिंड प्रभु, ज्ञानका सागर, गुणका गोदाम, अनंत गुणका गोदाम प्रभु है. आहाहा ! ऐसी द्रव्यस्वभाव उपर दृष्टि देनेसे अनुभूति होती है. ये अनुभूति ओ सम्यक् आत्मभ्याति है. ओ अनुभूतिमें आत्मा प्रसिद्ध हुआ. भेदमें आत्मा प्रसिद्ध नहीं होता. आहाहा ! भेदमें तो रागकी पर्याय उत्पन्न होती है.

( श्रोता:- अनुभूति ज्ञानकी पर्याय है ? ) ज्ञानकी पर्याय है, पण ओ ज्ञानकी पर्याय त्रिकाणके आश्रयसे हुए है ने ? तो पर्याय तो कहां. अनुभूति है पर्याय, पण किसकी अनुभूति किया ? त्रिकाण द्रव्यकी, अनुभूति. त्रिकाण द्रव्यकी अनुभूति है अनुभूतिकी पर्यायमें त्रिकाण द्रव्य आता नहीं. पण त्रिकाण द्रव्यका सामर्थ्य है ये अनुभूतिमें आता है. आहाहा ! ज़ीषी वात बहु बापु ! वर्तमानमां तो गरबड बहु हो गए है. पहेली सम्यग्दर्शनकी बातमें गरबड हो गए हैं ? आवो प्रभु ओक सेकंडना असंप्य भागमां ज्वद्रव्य जो स्वभाव त्रिकाणी ज्ञायक ऐकरूप भाव उसकी समीप जानेपर अर्थात् नवतत्त्वका भेदको दूर करकर, आहाहा ! ओक ज्वद्रव्य स्वभाव उसकी समीप जानेपर पर्याय ज्ञानकी वो तरफ़ जूकनेसे, आहाहा ! जो आत्मा जैसा है ऐसा अनुभूतिमें प्रसिद्ध हुआ. त्यां आत्मा जैसा है ऐसा प्रसिद्ध हुआ. आहाहा ! समजमें आया ? हैने ? ओ अनुभूति है सो आत्मभ्याति है. आहाहाहाहा !

ओ यैतन्य द्रव्य महाप्रभु, सखियदानंद प्रभु, जिनस्वरूपी भगवान, उसका अनुभव करने पर वो तरफ़ जूकनेसे, आहाहा ! तब उसको आत्मभ्याति, आत्मा कैसा है ऐसी प्रसिद्धि

होती है. अनुभूतिमें आया कि आत्मा तो ज्ञानस्वरूप अખंड है, अनुभूतिमें आया कि आनंद स्वरूप भगवान अખंड है अनुभूतिमें आया कि प्रभुत्व ईश्वरतासे पूरा भरा पडा प्रभु है. आहाहा ! अे अनुभूतिमें आत्माकी प्रसिद्धि हुई. आहाहाहा ! अे रागकी पर्यायमें आत्माकी प्रसिद्धि नहीं होती. दया, दान, व्रत, भक्ति तप आदि लाभ करोड अंभज करे, समजमें आया ? वो छ ढाणामें आता है कि नहीं ? “लाभ बातकी बात निश्चय उर आणो. छोडी जगत दंड इंद्र अेक आत्म उर ध्यावो”. छ ढाणामें आता है. पण अर्थ कोने भबर ? घडीया हांडये ज्ञय. अैसा छ ढाणामें क्वा, पण वस्तु क्या ? अनंत बातकी बात. भेदसे दूर होकर आत्मज्ञायक स्वरूप त्रिकाण शुद्ध यैतन्यधन परमात्मा स्वरूप उसको उरमें ध्यावो. ध्यानमें उसको ध्येय बनावो. आहाहा ! तब उसको आत्म प्रसिद्धि होती है.

( श्रोता:- नवतत्त्वमां दंड इंद्र है ? ) वो तो भंध है, दंड है. भेद है ये दंड है. अेकरूपमें दो प्रकार अे दंड है. ( श्रोता:- दंड कडो पण इंद्र क्या है ? ) दंड कडाने दो. अेकरूपमें नवप्रकारको दंड हुवा तो द्वैत हुवा. आहाहाहाहा ! भाछ ! सम्यग्दर्शन ने अनुभव उसका विषय कोछ अलौकिक है. कभी किया नहीं. सूनेमें आया तो दरकार किया नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! पहेलां धर्मनुं बीज त्यांसे उत्पन्न होता है, और बीज होवे बीज, तो पंढरमें दिने, तेर दिन( पीछे ) तो पूनम होगी होगी ने होगी.

अैसे भगवान आत्मा पूर्ण स्वरूपका अनुभवमें अनुभूति हुई. सम्यग्दर्शन हुवा दृष्ट उगी, तो उसको पूनम नाम केवणज्ञान प्राप्त होगा, होगा ने होगा. आहाहा ! समजमें आया ? अैसी अनुभूतिमें आत्माकी पहेयान है, प्यातिनो अर्थ अे कर्यो, पहेयान नाम प्रसिद्धि. आत्मा जैसा था अैसा अनुभूतिमें प्रसिद्ध हुवा. आहाहा ! राग ने व्यवहार रत्नत्रयमें तो रागकी प्रसिद्धि थी अनात्माकी प्रसिद्धि थी व्यवहार रत्नत्रयका रागमें अनात्माकी प्रसिद्धि थी. आहाहाहाहा !

अंतरमें ज्ञायकभावमें समीप जाकर बहारसे, सभसे पर्यायको हठाकर अंतरमें गुफा प्रभु यैतन्यमें, गुफा लिया है हां ४८ गाथा है ने समयसारकी उसमें जयसेन आचार्यकी टीकामें अनुभूतिरूपी गुफामें यले जा अंदर, अैसा पाठ है संस्कृत. तात्पर्यवृत्ति जयसेन आचार्यनी टीका, छे आंही ? संस्कृत नहीं, समयसार नहीं. संस्कृत टीका है. ४८ टीका है ४८ की. अरस अगंध अरूप अगंध अव्यक्तं उसकी टीकामें लिया है, कि धर्मात्मा मुनि कहां जाते है ? अपनी निर्विकल्प समाधिरूपी गुफामें पेसते है अंदर. बहारनी गुफामें तो तुं अनंतभैर रहा. पर्वतकी गुफामें रहेते है तो त्यां धर्म होता है अैसा है नहीं. अंतर यैतन्य भगवान पूर्णानंदकी गुफा है अंदर. आहाहाहा ! गिरिगुफा, अैसा पाठ लिया है. अनंत अनंत शांतिकी शोभासे अंतरमें प्रवेश करनेसे गिरिगुफामें प्रवेश किया, महा परमार्थ परमात्मा अेनी गुफामें प्रवेश किया. आहाहा ! भारे वात भाछ ! आ तो निश्चय आ है ने व्यवहार जूहा है. है ? अेम आंही ठराव्या.

“और जो आत्मप्याति है, सो सम्यग्दर्शन ही है”. है ? तीन बात लिया. के जे ज्ञायक ध्रुव यैतन्य अेकरूप परमात्म स्वरूप जिन स्वरूप, घटघट अंतर जिन वसे, अैसा जो भगवान

जिन स्वरूपी त्रिकाण है. वस्तु स्वभाव त्रिकाण जिन स्वरूप ही है. तो उसके समीप जानेसे, जो सम्यग्दर्शन होता है अनुभूति होती है, अ अनुभूति धर्म पर्याय है. अ अनुभूतिमें आत्माकी प्रसिद्धि हुई. अ अनुभूतिमें आत्माका ज्ञान हुआ, अ अनुभूतिमें आत्मा कैसा है उसका पहेयान हुआ. आहाहाहा... अ विना आत्माकी पहेयान होती नहीं, शास्त्रसे वांचे, लक्षे गमे ते करे, लाभ शास्त्र लक्षे, आहाहा ! उससे कोछ आत्माकी प्रसिद्धि नहीं होती. आहाहा ! युगलञ्च ! आहाहा !

अगियार अंग तो अनंत बैर पढया है. अक आचारांगमें अढार इजार पढ और अक पढमें प१ करोड ज़ांरेर श्लोक, अैसा अैसा अढार इजार पढ, छत्रीस इजार पढ, भोंतेर इजार पढ, अैसा अगियार अंगमें उबल करते करते छेवला ले जाना, अैसा अगियार अंग तो अनंतबैर पढया है, वो तो शास्त्रज्ञान है. शब्दज्ञान है. बंध अधिकारमें कडा है, ये शास्त्रज्ञान अे शब्दज्ञान है, आत्मज्ञान नहीं. आहाहाहाहाहा ! त्यां बंध अधिकारमें लिया है. आचारांग आदि शब्दज्ञान है, अैसा लिया है. बंध अधिकार समयसार. आहाहाहा ! और नवतत्त्व अे दर्शन है व्यवहार और छ कायनी दया अे यारित्र है व्यवहार-राग अे निश्चय अे नहीं, सत्य अे नहीं. आहाहा !

सत्य तो भगवान आत्मा 'पूर्णाष्टं' स्वभावकी पूर्णतासे लरा पडा अक अंश ली भंड नहीं, अक अंश ली अपूर्णता नहीं, अक उसका अंशमें अशुद्धता नहीं, जिसमें त्रिकाण निरावरण है. आहाहाहा ! जे वस्तु जे है अे तो त्रिकाण निरावरण है. उर० गाथामें आया है छेवले उर० जयसेन आचार्य "जे सकण निरावरण अभंड अक प्रत्यक्ष प्रतिभासमय अविनश्चर शुद्ध पारिष्णामिक परमभाव लक्षण निज परमात्म तत्त्व द्रव्य ते हुं छुं" समजमें आया ? है ने अे ? आ तो सब व्याभ्यान हो गये, बहोत हो गया है.

ये है देभो, जयसेन आचार्यकी टीका है "जे सकण निरावरण" द्रव्य वस्तु जो है ये तो त्रिकाल निरावरण है. आहाहाहा ! जो सम्यग्दर्शनका विषय, जिसके आश्रयसे अनुभूति होती है, ये सकण निरावरण है अक. "अभंड" है, पर्यायका भंड उसमें है नहीं. "अक", अकरूप है. "प्रत्यक्ष प्रतिभासमय" है. ज्ञानकी पर्यायमें सारा द्रव्य जैसा है वैसा प्रतिभासमें आता है. प्रत्यक्ष ज्ञानकी पर्यायमें प्रतिभास जैसा है अैसा भास आता है. आहाहाहा ! "अविनश्चर" है त्रिकाण. नाशवंत कोछ यीज उसमें ( नहीं ) पर्याय नाशवान है. केवणज्ञान ली नाशवान है. आहाहा ! अक समयकी पर्याय है ने ? नियमसार शुद्धभाव अधिकारमें पहेली गाथामें लिया है, के संवर निर्जरा पुण्य पाप ने केवणज्ञानने अे पर्याय बधी नाशवान है. आहाहा ! क्योकि अक समय रहेती है. भगवान अविनश्चर त्रिकाण अंदर है. आहाहाहा ! अरे ! अने "शुद्ध पारिष्णामिक परमभाव लक्षण निज परमात्म द्रव्य ते ज हुं छुं". परंतु अेम भावतो नथी के भंडज्ञानरूप हुं छुं. धर्मी पर्यायका-भंडका ज्ञानका भावना करते नहीं. आहाहा ! अे संस्कृत टीका है. उसका आ गुजराती है. समजमें आया ?

अर्हीया कडा के अे त्रिकाणी ज्ञायक स्वभाव ! भाछ ! अे वात अनुभवमें लाना वो कोछ अलौकिक बात है. आहाहा ! अे तरङ्गसे जूकनेसे पर्यायको द्रव्य तरङ्गको जूकनेसे, पर्याय जो दूर

है राग तरङ्ग जाती है ओ पर्यायको अंतरमें लाना. आहाहा ! इसका नाम आत्म समीप गये, क्या कहा ? जो वर्तमान पर्याय है ज्ञानकी रागको जानते हैं ने परको जाननेमें रहेती है, ओ पर्याय तो त्यां रही. પણ वो पर्याय अंदरमें ला शके नहीं, कारण वो पर्याय तो राग तरङ्ग जूकी है. पछीकी पर्याय द्रव्यमेंसे उत्पन्न होती है अने वो पर्याय अंतरमें जूकती है. आवी वात छे. आकरुं काम लाछ, समजमें आया ? ओ पर्यायका पति, शायक स्वभाव, आहाहा ! अनुभवमें आती है, तब ये वस्तु प्रसिद्ध हुछ के वस्तु ऐसी है त्रिकाण शुद्ध है, त्रिकाण आनंद है, त्रिकाण शायक है, त्रिकाण अभंड है, त्रिकाण अेक है, त्रिकाण सामान्य है. आहाहा ! ओ अनुभूति ओ आत्माकी प्रसिद्धि है, अने आत्माकी प्रसिद्धि ओ आत्मभ्याति है, और वो सम्यग्दर्शन है. आहाहा ! इच्छ तो धर्मनी पहेली सीढी, आहाहा ! ऐसा हुओे बिना उसका ज्ञान भी निरर्थक अने वो सब व्रत ने तप करे सब बाणव्रत ने बाणतप निरर्थक है. स्वभाव माटे निरर्थक, परिभ्रमण माटे सार्थक. आहाहा ! ( श्रोता:- अनेकांत कर्पुं ) आहाहा ! इस प्रकार यह सर्व कथन निर्दोष है, अमृतयंद्रायार्य कहेते है, आ सर्व कथन निर्दोष है. आहाहा ! बाधा रहित है ये टीका हो गछ.

हवे लावार्थ ये टीका हुछ अमृतयंद्रायार्यकी, मुनि संत द्विगंबर तो उसने आ टीका बनाछ है, आहाहाहा ! छतें वो कहेगा ये टीका मैंने बनाछ नहीं हों, क्योंकि ये तो शब्दकी पर्याय है. उसे मैं कहां रयुं ? मेरी ये किया नहीं. मैं तो स्वरूपमें गुप्त हुं. आहाहा ! मैं तो मेरा स्वरूपमें गुप्त हुं. मैं रागमें आता नहीं. विकल्प आया टीकाका तो ये रागमें में आता नहीं. आहाहा ! टीकाकी पर्याय मैंने किया, ओ हे जवो ऐसा मोह न करो, ओम कहते है, ऐसा मोह करके न नायो, के में टीका बनाछ ने टीकाओ तुमको समजाया, जैसे मत समजो प्रभु ! आहाहा ! वस्तुनी स्थिति ऐसी है. आत्मा रजकणकी पर्यायका कर्ता हो सकते नहीं. आहाहा !

आ तो आओ द्वि' में किया, में किया, आ किया, आहाहा ! में समजाता हुं में वाणी योष्पी निकाल करता हुं धीमे बोल सकता हुं, उग्रसे बोल सकता हुं, आहाहा ! ( श्रोता:- ये तो बराबर बात है. ) सब मिथ्याभाव है. हमारे शुं कैलासयंदज नहीं पहेले बोलते थे कैलासयंदज, भूंदेलभंड. धीमेसे बोलो, उतावणा बोलो, उतावणे, तमारे कछ लाषा है ? जोरसे बोलो. आत्मा जोरसे बोल सकते नहीं ने धीमेसे बोल सकते नहीं. आहाहाहा ! गजब वात है प्रभु ! शुं थाय ? तत्त्वनी जबर न मणे ने अवणे रस्ते यढ गया और मान बैठे के हम कांछ करते है धर्म. आहाहा ! हवे वो भ्रममां गया वो कहांसे भगवान पासे जा शके ? आहाहा ! समजमें आया ? भगवान नाम आत्मा हों.

लावार्थ: लावार्थ है ? "छन नवतत्त्वमें शुद्धनयसे देषा जाये तो जव ही ओक यैतन्य यमत्कार मात्र प्रकाशरूप प्रगट हो रहा है" नवतत्त्वका भेदकी पर्यायमेंसे देषो तो सारा नवतत्त्वमें सामान्य द्रव्य त्रिकाण यैतन्य यमत्कार भरा है. आहाहाहा ! नवतत्त्वमें पर्यायभेद, शुद्धनयसे देषे जाय तो, द्रव्य स्वभावसे देषे जाये तो, जव ही ओक यैतन्य यमत्कार मात्र प्रकाशरूप प्रगट हो रहा है. आहाहा ! इसके अतिरिक्त, छससे भिन्न, भिन्न भिन्न नवतत्त्व कुछ भी दिभाछ नहीं देते. आहाहा ! स्वभाव पूर्णानंदका देषनेसे, नवतत्त्वका भिन्न भिन्न त्यां है नहीं, दिभते कहां ? त्यां तो ओकीला भगवान आत्मा पूर्णानंद है. आहाहा ! जगतक छस प्रकार

ज्वलत्त्वकी जानकारी ज्वलको नहीं. आहाहा ! ज्यों लगी, इस प्रकार ज्वलत्त्व अकाकार ज्ञायकभावका अनुभव नहीं करते, ज्वलको नहीं, तब तक ये व्यवहार दृष्टि है, पर्याय बुद्धि है. अक अंशको माननेवाला है मूढ़ है. आहाहा ! “पर्याय मूढ़ पर समया” प्रवचनसार ८३ गाथा. आहाहा ! अक समयकी पर्यायने मानना वो भी मूढ़ है. सारा द्रव्य भगवान रह जाता है. आहाहा ! आवी वात. है ? व्यवहार दृष्टि ? भिन्न भिन्न नवतत्त्वको मानता है.

ज्वल पुद्गलकी बंध पर्यायरूप दृष्टिसे यह पदार्थ भिन्न भिन्न दिभाए देते है, किन्तु जब शुद्धनयसे ज्वल पुद्गलका निज स्वरूप, भिन्न भिन्न देभा जाये, आहाहा ! रागका स्वरूप भिन्न है ने यैतन्यका स्वरूप रागसे भिन्न है, जैसे दिभा जाये, तब ये पुण्य पाप आदि सात तत्त्व तो कुछ भी वस्तु नहीं है. आहाहाहा ! है ?

( श्रोता:- कोए वस्तु नहीं ? ) वस्तु कहां है ? ये ज्ञानका ज्ञेय हो गया. अपनेमें नव भेद है नहीं. आहाहा ! सूक्ष्म विषय ! अनंत काण अनंत काण हुवा.. साधु भी अनंत बैर हुवा, पण उसने आत्मज्ञान न किया. ओ नवतत्त्व ने रागनी किया ने पंचमहाव्रतना परिणाम ने.

कह्याने उसमें यह “मुनिव्रतधार अनंत बैर त्रैवेयक उपजायो पण आत्मज्ञान बिन लेश सुभ न पायो”. ओ पंच महाव्रतका परिणाम भी दुःखरूप है. उससे हठकर आत्मा आनंदमूर्ति है, ओ तरफ कभी जूकाव किया नहीं. आहाहा ! यार गतिमें रूलते है अवा द्रव्यविंग अनंतबैर लिया. जैन मुनि द्रव्यविंग नग्नपणा ऐसा अनंतबैर अठयावीस भूणगुण पाण्या और पीछे अनंत अनंत भव द्रव्यविंग करके भी अष्टपाहुडमें है विंग पाहुडमें, द्रव्यविंग अनंत बैर धारण करके अनंत अनंत योर्यासीना अवतारमां पीछे इर्या. आहाहा ! पण वो मित्थ्यात्वका नाश अने सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति क्या है, ये ज्यालमें लिया ही नहीं. आहाहा ! भाकी पंडिताए अगियार अंगकी कुछ. लोगोंको समजावे पांच पांच इण्णर दश दश इण्णर माणसोको समजावे उसमें क्या हुवा ? आहाहा ! भाषाकी पर्याय जड, विकल्प उठते है ओ भी अयेतन, भगवान तो ओ अयेतनसे भिन्न यैतन्यस्वरूप भगवान जागृत स्वभावका पिंड, आहाहा ! ओ तरफका जूकाव नहीं किया तो सम्यग्दर्शन नहीं हुवा. सम्यग्दर्शन बिनाका ज्ञान ने व्रत आदि सब अज्ञान है. आहाहा ! है ?

किन्तु जब शुद्धनयसे ज्वल पुद्गलका निज स्वरूप भिन्न भिन्न देभा जाये तब पुण्य पाप आदि कुछ नहीं. निमित्त नैमित्तिकभावसे हुओ थे. ‘नैमित्तिक अपनी अवस्था कर्म निमित्त, निमित्तसे हुवा नहीं पण निमित्त है अने नैमित्तिक अपनी अवस्था नव’ इसलिये ये निमित्त नैमित्तिकभाव जब मिट गया तब ज्वल पुद्गल भिन्न होकर भिन्न होनेसे अन्य कोए वस्तु सिद्ध नहीं हो सकती. भगवान भगवानरूपे आत्मा है कर्म पुद्गल पुद्गलरूपे है अमां कोए दूसरी यीज भिन्न नहीं होती. वस्तु तो द्रव्य है और द्रव्यका निज भाव तो द्रव्यके साथ ही रहेता है. ज्ञान, आनंद, शांति, स्वच्छता, प्रभुता. आहाहा ! निमित्त नैमित्तिकभावका अभाव ही होता है. इसलिये शुद्धनयसे ज्वलको जानेसे ही सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति हो सकती है. आहाहा ! जब तक भिन्न भिन्न नवपदार्थोंको जाने और शुद्धनयसे आत्माको न जाने तब तक पर्याय बुद्धि है मिथ्या बुद्धि है. आहाहा ! समजमें आया ?

## શ્લોક - ૮

( માલિની )

ચિરમિતિ નવતત્ત્વચ્છન્નમુન્નીયમાનં  
 કનકમિવ નિમગ્નં વર્ણમાલાકલાપે ।  
 અથ સતતવિવિક્તં દૃશ્યતામેકરૂપં  
 પ્રતિપદમિદમાત્મજ્યોતિરુદ્યોતમાનમ્ ॥૮॥

અથૈવમેકત્વેન દ્યોતમાનસ્યાત્મનોડધિગમોપાયાઃ પ્રમાણનયનિક્ષેપાઃ યે તે ચલ્વભૂતાર્થાસ્તેષ્વપ્યયમેક એક ભૂતાર્થઃ । પ્રમાણં તાવત્પરોક્ષં પ્રત્યક્ષં ચ । તત્રોપાત્તાનુપાત્ત-પરદ્વારેણ પ્રવર્તમાનં પરોક્ષં, કેવલાત્મપ્રતિનિયતત્વેન પ્રવર્તમાનં પ્રત્યક્ષં ચ । તદુભયમપિ પ્રમાતૃપ્રમાણપ્રમેયભેદસ્યાનુભૂયમાનતાયાં ભૂતાર્થમ્, અથ ચ વ્યુદસ્તસમસ્તભેદૈકજીવસ્વ-ભાવસ્યાનુભૂયમાનતાયામભૂતાર્થમ્ । નયસ્તુ દ્રવ્યાર્થિકઃ પર્યાયાર્થિકશ્ચ । તત્ર દ્રવ્યપર્યાયાત્મકે વસ્તુનિ દ્રવ્યં મુખ્યતયાનુભાવયતીતિ દ્રવ્યાર્થિકઃ, પર્યાયં મુખ્યતયાનુભાવ-યતીતિ પર્યાયાર્થિકઃ । તદુભયમપિ દ્રવ્યપર્યાયયોઃ પર્યાયેણાનુભૂયમાનતાયાં ભૂતાર્થમ્, અથ ચ દ્રવ્યપર્યાયાનાલીઢશુદ્ધવસ્તુમાત્રજીવસ્વભાવસ્યાનુભૂયમાનતાયામભૂતાર્થમ્ । નિક્ષેપસ્તુ નામ સ્થાપના દ્રવ્યં ભાવશ્ચ । તત્રાતદ્વુગે વસ્તુનિ સંજ્ઞાકરણં નામ । સોડ્યમિત્યન્યત્ર પ્રતિનિધિવ્યવસ્થાપનં સ્થાપના । વર્તમાનતત્પર્યાયાદન્યદ દ્રવ્યમ્ । વર્તમાનતત્પર્યાયો ભાવઃ । તદ્દતુષ્ટયં સ્વસ્વલક્ષણવૈલક્ષણ્યેનાનુભૂયમાનતાયાં ભૂતાર્થમ્, અથ ચ નિર્વિલક્ષણસ્વ-લક્ષણૈકજીવસ્વભાવસ્યાનુભૂયમાનતાયામભૂતાર્થમ્ । અથૈવમમીષુ પ્રમાણનયનિક્ષેપેષુ ભૂતાર્થત્વેનૈકો જીવ એવ પ્રદ્યોતતે ।

અહીં, એ અર્થનું કલશરૂપ કાવ્ય કહે છે:-

શ્લોકાર્થ:- [ ઇતિ ] આ રીતે [ ચિરમ્ નવ-તત્ત્વ-ચ્છન્નમ્ ઇદમ્ આત્મજ્યોતિઃ ] નવ તત્ત્વોમાં ઘણા કાળથી છુપાયેલી આ આત્મજ્યોતિને, [ વર્ણમાલા-કલાપે નિમગ્નં કનકમ્ ઇવ ] જેમ વર્ણોના સમૂહમાં છુપાયેલા એકાકાર સુવર્ણને બહાર કાઢે તેમ, [ ઉન્નીયમાનં ] શુદ્ધનયથી બહાર કાઢી પ્રગટ કરવામાં આવી છે. [ અથ ] માટે હવે હે ભવ્ય જીવો ! [ સતતવિવિક્તં ] હંમેશાં આને અન્ય દ્રવ્યોથી તથા તેમનાથી થતા નૈમિત્તિક ભાવોથી ભિન્ન, [ એકરૂપં ] એકરૂપ [ દૃશ્યતામ્ ] દેખો. [ પ્રતિપદમ્ ઉદ્યોતમાનમ્ ] આ ( જ્યોતિ ), પદે પદે અર્થાત્ પર્યાયે પર્યાયે એકરૂપ ચિત્યમત્કારમાત્ર ઉદ્યોતમાન છે.

ભાવાર્થ:- આ આત્મા સર્વ અવસ્થાઓમાં વિધવિધ રૂપે દેખાતો હતો તેને શુદ્ધનયે એક ચૈતન્ય-ચમત્કારમાત્ર દેખાડ્યો છે; તેથી હવે સદા એકાકાર જ અનુભવ કરો, પર્યાયબુદ્ધિનો એકાંત ન રાખો-એમ શ્રી ગુરુઓનો ઉપદેશ છે. ૮.

ટીકા :- હવે, જેમ નવ તત્ત્વોમાં એક જીવને જ જાણવો ભૂતાર્થ કહ્યો તેમ, એકપણે



પ્રકાશમાન આત્માના અધિગમના ઉપાયો જે પ્રમાણ, નય, નિક્ષેપ છે તેઓ પણ નિશ્ચયથી અભૂતાર્થ છે, તેમાં પણ આત્મા એક જ ભૂતાર્થ છે ( કારણ કે જ્ઞેય અને વચનના ભેદોથી પ્રમાણાદિ અનેક ભેદરૂપ થાય છે ). તેમાં પહેલાં, પ્રમાણ બે પ્રકારે છે-પરોક્ષ અને પ્રત્યક્ષ. <sup>૧</sup>ઉપાત્ત અને <sup>૨</sup>અનુપાત્ત પર ( પદાર્થો ) દ્વારા પ્રવર્તે તે પરોક્ષ છે અને કેવળ આત્માથી જ પ્રતિનિશ્ચિતપણે પ્રવર્તે તે પ્રત્યક્ષ છે. ( પ્રમાણ જ્ઞાન છે. તે જ્ઞાન પાંચ પ્રકારનું છે-મતિ, શ્રુત, અવધિ, મન:પર્યય ને કેવળ. તેમાં મતિ ને શ્રુત એ બે જ્ઞાન પરોક્ષ છે, અવધિ ને મન:પર્યય એ બે વિકલ-પ્રત્યક્ષ છે અને કેવળજ્ઞાન સકલ-પ્રત્યક્ષ છે. તેથી એ બે પ્રકારનાં પ્રમાણ છે. ) તે બન્ને પ્રમાતા, પ્રમાણ, પ્રમેયના ભેદને અનુભવતાં તો ભૂતાર્થ છે, સત્યાર્થ છે; અને જેમાં સર્વ ભેદો ગૌણ થઈ ગયા છે એવા એક જીવના સ્વભાવનો અનુભવ કરતાં તેઓ અભૂતાર્થ છે, અસત્યાર્થ છે.

નય બે પ્રકારે છે-દ્રવ્યાર્થિક અને પર્યાયાર્થિક. ત્યાં દ્રવ્ય-પર્યાયસ્વરૂપ વસ્તુમાં દ્રવ્યનો મુખ્યપણે અનુભવ કરાવે તે દ્રવ્યાર્થિક નય છે અને પર્યાયનો મુખ્યપણે અનુભવ કરાવે તે પર્યાયાર્થિક નય છે. તે બંને નયો દ્રવ્ય અને પર્યાયનો પર્યાયથી ( ભેદથી, ક્રમથી ) અનુભવ કરતાં તો ભૂતાર્થ છે, સત્યાર્થ છે; અને દ્રવ્ય તથા પર્યાય એ બન્નેથી નહિ આલિંગન કરાયેલા એવા શુદ્ધવસ્તુમાત્ર જીવના ( ચૈતન્યમાત્ર ) સ્વભાવનો અનુભવ કરતાં તેઓ અભૂતાર્થ છે, અસત્યાર્થ છે.

નિક્ષેપ ચાર પ્રકારે છે-નામ, સ્થાપના, દ્રવ્ય ને ભાવ. વસ્તુમાં જે ગુણ ન હોય તે ગુણના નામથી ( વ્યવહાર માટે ) વસ્તુની સંજ્ઞા કરવી તે નામ નિક્ષેપ છે. 'આ તે છે' એમ અન્ય વસ્તુમાં અન્ય વસ્તુનું પ્રતિનિધિત્વ સ્થાપવું ( -પ્રતિમારૂપ સ્થાપન કરવું ) તે સ્થાપના નિક્ષેપ છે. વર્તમાનથી અન્ય એટલે કે અતીત અથવા અનાગત પર્યાયથી વસ્તુને વર્તમાનમાં કહેવી તે દ્રવ્ય નિક્ષેપ છે. વર્તમાન પર્યાયથી વસ્તુને વર્તમાનમાં કહેવી તે ભાવ નિક્ષેપ છે. એ ચારેય નિક્ષેપોનો પોતપોતાના લક્ષણભેદથી ( વિલક્ષણરૂપે-જુદા જુદા રૂપે ) અનુભવ કરવામાં આવતાં તેઓ ભૂતાર્થ છે, સત્યાર્થ છે; અને ભિન્ન લક્ષણથી રહિત એક પોતાના ચૈતન્યલક્ષણરૂપ જીવ-સ્વભાવનો અનુભવ કરતાં એ ચારેય અભૂતાર્થ છે, અસત્યાર્થ છે. આ રીતે આ પ્રમાણ-નય-નિક્ષેપોમાં ભૂતાર્થપણે એક જીવ જ પ્રકાશમાન છે.

ભાવાર્થ :- આ પ્રમાણ, નય, નિક્ષેપોનું વિસ્તારથી વ્યાખ્યાન તે વિષયના ગ્રંથોમાંથી જાણવું; તેમનાથી દ્રવ્યપર્યાયસ્વરૂપ વસ્તુની સિદ્ધિ થાય છે. તેઓ સાધક અવસ્થામાં તો સત્યાર્થ જ છે કારણ કે તે જ્ઞાનના જ વિશેષો છે. તેમના વિના વસ્તુને ગમે તેમ સાધવામાં આવે તો વિપર્યય થઈ જાય છે. અવસ્થા અનુસાર વ્યવહારના અભાવની ત્રણ રીતિ છે: પહેલી અવસ્થામાં પ્રમાણાદિથી યથાર્થ વસ્તુને જાણી જ્ઞાન-શ્રદ્ધાનની સિદ્ધિ કરવી; જ્ઞાન-શ્રદ્ધાન સિદ્ધ થયા પછી શ્રદ્ધાન માટે તો પ્રમાણાદિની કાંઈ જરૂર નથી. પણ હવે એ બીજી

૧. ઉપાત્ત = મેળવેલા. ( ઇન્દ્રિય, મન વગેરે ઉપાત્ત પર પદાર્થો છે. )

૨. અનુપાત્ત = અણમેળવેલા. ( પ્રકાશ, ઉપદેશ વગેરે અનુપાત્ત પર પદાર્થો છે. )

અવસ્થામાં પ્રમાણાદિના આલંબન દ્વારા વિશેષ જ્ઞાન થાય છે અને રાગ-દ્વેષ-મોહકર્મના સર્વથા અભાવરૂપ યથાખ્યાત ચારિત્ર પ્રગટે છે; તેથી કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે. કેવળજ્ઞાન થયા પછી પ્રમાણાદિનું આલંબન રહેતું નથી. ત્યાર પછી ત્રીજી સાક્ષાત્ સિદ્ધ અવસ્થા છે ત્યાં પણ કાંઈ આલંબન નથી. એ રીતે સિદ્ધ અવસ્થામાં પ્રમાણ-નય-નિક્ષેપોનો અભાવ જ છે.

ઈસ અર્થકા કળશ કહેતે હૈ. લ્યો કળશ હૈ ને આઠ.

ચિરમિતિ નવતત્ત્વચ્છન્નમુત્રીયમાનં કનકમિવ નિમગ્નં વર્ણમાલાકલાપે ।

અથ સતતવિવિક્તં દૃશ્યતામેકરૂપં પ્રતિપદમિદમાત્મજ્યોતિરુદ્યોતમાનમ્ ॥૮ ॥

ઈતિ નામ ઈસ પ્રકારે “ચિરમ્ નવતત્ત્વ ચ્છન્નમ્ ઈદમ્ આત્મ જ્યોતિ” આહાહાહા ! નવતત્ત્વકે ભેદમેં બહોતસે સમયસે છીપી હુઈ, નવતત્ત્વકા ભેદમેં પીછે આ વસ્તુ હૈ. યહ છિપક ઢંકી ગઈ. આહાહા ! ભેદકી નવતત્ત્વકી પર્યાય બુદ્ધિમેં ઓ દ્રવ્ય સ્વભાવ ઢંક ગયા. આહાહા ! હૈ ? શુદ્ધનયસે બહાર નિકાલકર પ્રગટ કી ગઈ, એસી આત્મજ્યોતિ જો છીપી થી. પર્યાય કે પીછે અંદર દ્રવ્યસ્વભાવ ઢંકા દિખતે થે, એ શુદ્ધનયસે સ્વભાવ પર દૃષ્ટિ કરનેસે એ ભાવ વો પ્રકાશિત હુવા. નવકી પર્યાયમેં રુકનેસે દ્રવ્યસ્વભાવ ઢંક ગયા થા, છીપ ગયા થા. ઉસે અંતરમેં શુદ્ધનયસે દેખને પર આત્મા પ્રકાશિત હોતા હૈ. હૈ ? આહાહા !

શુદ્ધનયસે બહાર નિકાલકર પ્રગટ કી ગઈ, જૈસે વર્ણો કે સમૂહમેં છીપે હુએ એકાકાર સુવર્ણ, સોના હોતા હૈ ને સોના સોનું. અગ્નિમેં દેતે હૈ ને તાપ, તો ભિન્ન ભિન્ન ભિન્ન રંગ હોતા હૈ, સોનાના વર્ણમેં, પણ ઉસમેં સોના તો એકરૂપ ભિન્ન હૈ. સમજમેં આયા ? એસે આત્મામેં નવપ્રકારકી પર્યાય ભિન્ન ભિન્ન હૈ, પણ ઉસસે આત્મા તો ઉસસે ભિન્ન હૈ. આહાહાહા ! સંવર, નિર્જરા ને મોક્ષકી પર્યાયસે ભી ભિન્ન હૈ એમ કહેતે હૈ. આહાહા ! હૈ ?

ઈસલિયે અબ હૈ ભવ્ય જીવો, આચાર્ય મહારાજ સંબોધન કરતે હૈ “અથ” હવે, હે ! લાયક જીવો ! સતતવિવિક્તં સદા અન્ય દ્રવ્યોસે, અનેરા પદાર્થસે, ઉનમેં હોનેવાલા નૈમિત્તિકભાવ વિકારસે ભિન્ન, અન્ય દ્રવ્યસે ભિન્ન અને અન્ય દ્રવ્યકા નિમિત્તસે અપનેમેં હુઆ વિકાર, ઉસસે ભી ભગવાન ભિન્ન. આહાહા... એકરૂપ દેખો, એકરૂપ દેખો “એક દેખિએ, જાણીએ, રમી રહીએ એક ઠોર, સમળ વિમળ ન વિચારીએ, એ હી સિદ્ધિ નહીં ઓર” અમારે વીરજીભાઈ વકીલ થા. આ કાઠિયાવાડમેં દિગંબરના અભ્યાસી વીરજીભાઈ વકીલ થા જામનગર. જો પહેલાં અભ્યાસ થા ઉસકા વો પુરાના, ૯૧-૯૨ વર્ષે ગુજર ગયે. તો વો આ વારંવાર કહેતે થે. સમયસાર નાટકકી બાત હૈ “એક દેખિએ, જાણીએ, રમી રહીએ એક ઠોર, સમળ વિમળ ન વિચારીએ એ હી સિદ્ધિ નહીં ઓર” સમયસાર નાટકકા શબ્દ હૈ, એકરૂપ દેખીએ. વસ્તુકો એકરૂપ હૈ એસા દેખો. દેખીએ જાણીએ રમી રહીએ એક ઠોર, ઓર ઉસમેં રમના. જ્ઞાયકભાવમેં દેખના, જ્ઞાયકકો શ્રદ્ધના ને જ્ઞાયકમેં રમના સમળ વિમળ ન વિચારીએ, એ અર્થાત્ દ્રવ્યરૂપ હૈ નિર્મળ અને દર્શન જ્ઞાન ચારિત્રના ભેદસે, વ્યવહારસે મલિન, દોઈકા વિચાર છોડી દેના. સમળ વિમળ ન વિચારીએ. ૧૬ મી ગાથાકા હૈ. સમજમેં આયા ? દર્શન જ્ઞાન ચારિત્રકા ભેદ હૈ એ વ્યવહાર હૈ. રાગ આદિકી બાત તો એકકોર રખો. અને ત્યાં તો એસા લિયા હૈ, કે દર્શન જ્ઞાન ચારિત્ર જો પર્યાયમાં ભેદ

હેં યે વ્યવહાર હૈ, ઉસકો મલિન કહેનેકી પદ્ધતિ હૈ, ઐસા લિયા હૈ. આહાહાહાહા ! રાગ તો મલિન હૈ હી, પણ એકમેં તીન પર્યાયકા ભેદ કરકે દેખના, વો ભી વ્યવહાર હૈ ને વિકલ્પ ઉઠતે હૈ તો મલિન હૈ. આહાહા ! તો યહાં યે કહેતે હૈ, દેખો, હૈ ને ?

એકરૂપ દેખો ! આહાહા ! આહાહાહા ! યહ જ્યોતિ પદ પદ પર, પદ પદ પર, પ્રત્યેક પર્યાયમેં એકરૂપ ચિત્ત ચમત્કારમાત્ર ઉદ્યોતમાન હૈ. પ્રત્યેક પર્યાયમેં ભગવાન તો ભિન્ન ચૈતન્ય ચમત્કાર જ્યોતિ પ્રકાશમાન, એ પર્યાયમેં કભી આઈ નહીં. આહાહા ! ઐસા ચૈતન્ય પાતાળ, ચૈતન્યકા પાતાળ ધ્રુવ, ઉસકો એકરૂપ દેખો. આહાહા ! અરે ! આકરું કામ છે આવું. એક તો આ દુનિયાના વ્યવસાય આડે નવરો નથી. એ જાપાનીએ કહ્યું હતું ઇતિહાસવાળાએ, જાપાની માણસે વાણિયાને જૈન ધર્મ મળ્યો ને વાણિયા વ્યવસાય વિના નવરા થતા નથી, પાપ આડે. આખો દિ' આ ધંધા ધંધા ધંધા. અહીં તો કહીએ છીએ પહેલેથી ઘણાં. દુકાનનો ધંધો રર કલાકને રર કલાક ને બાયડી છોકરા. અરરર ! એકલા પાપના વ્યવસાયમાં પડયા, ઊડે કૂવે, હવે એને આત્મા તરફકા ઝૂકાવડી બાત કરના. હૈં ? ફસાઈ ગયો છે એ, ફસાઈ ગયો એ. ગરાસમાં ને અમારામાં. આ મારા દિકરા ને આ મારો ગરાસ ને આ મારી આવી પેદાશ. પચાસ હજારની, લાખની એક પેદાશ, દસ લાખની પેદાશ મારે. હૈં ? ( શ્રોતા:- મારો દિકરો મોટો સરકારી અમલદાર હૈ. ) મોટો અમલદાર. આવા અભિમાન મિથ્યા, દિકરા કોના ? એ તો પરદ્રવ્ય હૈ. પરદ્રવ્ય આત્માકા હોતા હૈ કદી ? આહાહા ! શરીર પરદ્રવ્ય હૈ, ઉસકા આત્મા પરદ્રવ્ય હૈ, તો મેરા દિકરા આયા કહાંસે તેરે ? સમજમેં આયા ? શાસ્ત્ર તો યે કહા નહીં ૧૬ મી ગાથામેં પર દવ્યાઓ દુગઈ. સ્ત્રી કુટુંબ પરિવાર સબ પરદ્રવ્ય હૈ, ઉસકા તરફ લક્ષ કરેગા તો દુર્ગતિ નામ રાગ ઉત્પન્ન હોગા. આહાહાહા ! ૧૬ મી ગાથામાં આવ્યું છે. પરદવ્યાઓ દુગઈ. પરદ્રવ્યરૂપી એ શરીર વાણી મન સ્ત્રી કુટુંબ ધંધા પરિવાર સબ પરદ્રવ્ય હૈ. પરદ્રવ્યકા લક્ષ કરનેસે તો દુર્ગતિ હી હોગી તેરી. રાગ ઉત્પન્ન હોગા તેરે, સિદ્ધ ગતિ નહીં હુઈ. આહાહા ! ઔર ત્યાં લગ કહેતે હૈ કે દેવ ગુરુ ને શાસ્ત્ર હમ હૈ. હમારા તરફ તેરા લક્ષ હોગા તો ભી તેરે દુર્ગતિ, રાગ હોગા. આહાહાહા ! આકરી વાત છે ભાઈ !

( શ્રોતા: તો કરવું શું અમારે ? ) 'આ કહેતે હૈ' ને ઉસકો છોડકર અંતર દૈષ્ટિ લેના. લાખ વાત હોય ને ગમે તેટલા. અબજોપતિ ઇન્દ્ર હોય બડા, તો કયા હૈ ? એ તો પર ચીજ હૈ. આહાહા ! અંદરસે પરસે હઠકર, અરે એ પુણ્ય ને પાપના વિકલ્પસે હઠકર, અરે એક સમયકી પર્યાયકા પ્રેમસે હઠકર, આહાહા ! અપના જ્ઞાયકભાવ એકરૂપ હૈ, હૈ ને ? પ્રત્યેક પર્યાયમેં એકરૂપ, યાહે તો નિગોદકી પર્યાય હો ને યાહે તો કેવળીકી પર્યાય હો. આહાહા ! પ્રત્યેક પર્યાયમેં એકરૂપ ચિત્યમત્કાર માત્ર ઉદ્યોતમાન હૈ. આહાહા ! ચૈતન્ય ચમત્કાર ! આહાહા ! અપના ક્ષેત્રમેં રહેને છર્તે પર ક્ષેત્ર લોક ને અલોક ઉસકા જાનનેવાલા, દેખનેવાલા ચૈતન્ય ચમત્કાર હૈ. આહાહા ! અપને ક્ષેત્રમેં રહેતે હુવે, પરક્ષેત્ર લોક ને અલોક વો અપનેમેં રહેતે હુવે, પરકો જાનતે હૈ. ઐસા ચૈતન્ય ચમત્કાર ભગવાન, ઉસકા અનુભવ કરો, ઉસકી દૈષ્ટિ કરો, ઉસકા આશ્રય લો, ઉસકા અવલંબન કરો, તો સમ્યઞ્ઠર્શન હોગા. આહાહા ! ચારિત્ર તો કહાં રહા, એ તો દૂસરી ચીજ હૈ. ઐસે સમ્યઞ્ઠર્શન હુએ પીછે, આત્મામેં આનંદમેં લીન હોના, આનંદમેં લીન હોકર અતીન્દ્રિય

આનંદકા અનુભવ ભોજન કરના ઉસકા નામ ચારિત્ર હૈ.

( શ્રોતા:- એ તો ચોથા કાળમાં પાંચમાં કાળમાં ! ) પાંચમાં આરામાં આ પંચમઆરાના ગૃહસ્થને તો કહેતે હૈ. પાંચમા આરાના સાધુ. આ તો પાંચમા આરાના સાધુ હૈ. કુંદકુંદાચાર્ય, અમૃતચંદ્રાચાર્ય અને પાંચમા આરાના જીવને તો કહેતે હૈ. કુંદકુંદાચાર્ય કબ હુવા હૈ ? દો હજાર વર્ષ પહેલે. હજી તો પાંચમા આરામું હુવા હૈ. અમૃતચંદ્રાચાર્ય ભી હજાર વર્ષ પહેલે હુવા હૈ. હજાર વર્ષ પહેલે તો યે યહાં જીવતે થે ભરતક્ષેત્રમું જીવતે થે અમૃતચંદ્રાચાર્ય. તો વો કહેતે હે કે તો પાંચમાં આરાના સંત, પાંચમાં આરાના જીવકો કહેતે હૈ. આ ચોથા આરાના સંત, પાંચમા આરાના એમ કહેતે નહીં. આહા ! આરા બારા કુછ નડતે નહીં અંદરમું. આહા ! યહાં એકરૂપ ચિત્યમત્કારમાત્ર ઉદ્યોતમાન હૈ. આહાહા !

ભાવાર્થ - “યહ આત્મા સર્વ અવસ્થાઓમું વિવિધ રૂપસે દિખાઈ દેતા થા” કયા કહેતે હૈ ? ભગવાન આત્મા પર્યાય પર્યાય દીઠ ભિન્ન પ્રકારસે પર્યાય દિખતી થી, કોઈ અલ્પ પર્યાય, કોઈ વિશેષ પર્યાય, કોઈ રાગ, કોઈ અરાગ એસે ભિન્ન ભિન્ન પર્યાય દિખતી થી. ઉસે શુદ્ધનયસે એક ચૈતન્ય ચમત્કાર માત્ર દિખાયા. આહાહા ! “ઈસલિયે અબ ઉસે સદા એકાકાર હી અનુભવ કરો.” હે ભવ્ય જીવો ! જીસકો સંસારકા નાશ કરના હો, આહાહા ! તો એકાકાર અનુભવ કરો. પ્રભુ એકરૂપ અંદર હૈ ઉસકા અનુભવ કરો. આહાહા ! પત્તા લગે નહીં કાંઈ, આવો માર્ગ છો.

પર્યાય બુદ્ધિકા એકાંત મત રખો. પર્યાય હૈ ખરી, નવભેદ હૈ ખરા, પણ એકાંત મત રખો કે, ઉસસે મેરા કલ્યાણ હોગા ને યહી આત્મા હૈ એસા ન રખો. પર્યાય હૈ, પર્યાય નહીં હૈ એસા નહીં. પર્યાયબુદ્ધિકા એકાંત મત રખો, અંદર દ્રવ્ય બુદ્ધિમું લે જાઓ આત્માકો. આહાહા ! એવું, એસા શ્રીગુરુઓકા ઉપદેશ હૈ. લ્યો એ સંતો દિગંબર સંતો પંચમઆરાના અનુભવીઓ કેવળજ્ઞાનના કેડાયતો, એ સંતોનો આ ઉપદેશ હૈ, સમજમું આયા ? એમ ટીકાકાર અર્થકારે ભાઈ આ તો સંતો દિગંબર મુનિઓ આ એમ કહેતે હૈ. આહાહા ! પંચમઆરામું ભી કુંદકુંદાચાર્ય, અમૃતચંદ્રાચાર્યો આદિ સાધુ બહોત સંત હુએ. વો સબ ગુરુઓકા એ ઉપદેશ હૈ, નવકા ભેદકી પર્યાયબુદ્ધિ છોડકર, એકરૂપ ત્રિકાળ સ્વભાવ ઉપર ટીંચિ કરો, તો તેરા જનમ મરણકા અંત આયેગા. નહીંતર ચોર્યાસીના અવતાર, તેરા કરના પડેગા પ્રભુ. આહાહા !

ટીકા: અબ એસે નવતત્ત્વમું એક જીવકો હી જાનના સત્યાર્થ કહા. એકરૂપ જીવકો જાનના એ સાચી વાત હૈ, ઉસી પ્રકાર એકરૂપસે પ્રકાશમાન આત્માકે, ભગવાન તો એકરૂપ વસ્તુ હૈ ચિદાનંદ. ઉસકે અધિગમકે ઉપાય. એને જાનનેકા જે ઉપાય આહાહાહા ! પ્રમાણ, નય ને નિક્ષેપ. આહાહાહા ! નવ તત્ત્વકો તો છોડયા પણ અબ કહેતે હૈ કે યહ આત્મા જો વસ્તુ હૈ ત્રિકાળ-ઉસકા જાનનેકા જો ઉપાય- પ્રમાણ નય ને નિક્ષેપ, આહાહા ! વે ભી નિશ્ચયસે અભૂતાર્થ હૈ. પ્રમાણ નય ને નિક્ષેપ જ્ઞાન પહેચાનનેકા હૈ, યે ભી અભૂતાર્થ જૂઠા હૈ. આહાહા !

( શ્રોતા:- કઠણ છો ) કભી કિયા નહીં તો કઠણ લગતે હૈ ઉસકો. આહાહા ! બાકી સત્ હૈ, સરળ હૈ, સર્વત્ર હૈ. કહા નહીં પરમાત્મા ? પોતે નહીં હૈ ? કઈ પર્યાયમું હાજરાહજૂર ભગવાન નહીં હૈ ? સમજમું આયા ? આહાહા ! કહાંકા પર્યાયમું ગમે તે પર્યાય હોય ભગવાન હાજરા

इष्टूर परमात्मा द्रव्य बिराजते है. પણ वो उपर नजर करते नहीं, तो कठण लगे. आहाहा ! ओ उनमें भी ओक आत्मा ही भूतार्थ है, नय निक्षेप, प्रमाणसे जानना वो भी परकी लक्षसे ज्ञान है. ये भी अभूतार्थ जूठा है. ये विशेष कहेगा. ( श्रोता:- प्रमाण वचन गुरुदेव. )